ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 92-94

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

आधुनिक संदर्भ में रामचरित मानस की प्रासंगिकता

डॉ0 ज्योति पटेल

सह0 प्राध्यापक– हिन्दी विभाग, शा0 पी0जी0 कॉलेज टीकमगढ़ (म0प्र0), भारत

Received- 25 .10. 2021, Revised- 30.10. 2021, Accepted - 04.11.2021 E-mail: meenaharkesh705@gmail.com

सारांशः ***संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल के श्रेष्ठिकवि भक्ता सुधारक एवं लोकनायक हैं। ये मध्यवयुगीन भारतीय साहित्य कोश के उज्जंवलरत्न है। उनमें प्रकाण्ड–पाण्डित्यक, गंभीर चिंतन शैली एवं प्रचण्डन कर्मशीलता का दुलर्भ समुच्चयय है। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ के साथ स्वतंत्रता व समानता के सिद्धांत ने और जोर पकड़ा तथा1917 की रूसी क्रांति से प्रेरित होकर साम्राज्यतवादी एवं सामंन्ती शक्तियों के विरूद्ध संघर्षरत होकर समस्तब विभेदों से परे एक खुशहाल समाज का स्वप्न संजोया गया । विश्व के लगभग सभी देशों में आधुनिकता के पदार्पण के साथ–साथ प्रत्येरक राष्ट्र की स्वतंत्रता, प्रत्ये क व्युक्ति की स्वतंत्रता, स्त्री पुरूष में समानता, प्रत्येनक व्यरक्ति की स्वतंत्रता, स्त्री पुरूष में समानता, व्यक्ति व्यक्तियों में समानता, अन्याय व शोषण से मुक्ति, समाज की स्थापना, धर्म, जाति, लिंग, धन आदि के आधार पर होने वाले विभेदों की समाप्ति सरीखे नवीन जीवन मूल्य् स्वीकृत हुए ।***

कुंजीभूत शब्द–उज्जंवलरत्न, प्रकाण्ड–पाण्डित्यक, गंभीर चिंतन शैली, प्रचण्डन कर्मशीलता,दुलर्भ समुच्चयय, सामंन्ती ।

तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि उनका यह महाकाव्य इन शाश्वत जीवन मूल्यों का आकाशदीप है तथा 'मानस' में इनका क्षेत्र सीमित नहीं है, अपितु उनमें वैश्विक दृष्टि है, तथा इनके माध्यनम से मानव मात्र के कल्याण की कामना है, रामचरित मानस युगवाणी है जो आधुनिक काल में उध्वगामी जीवन दृष्टि एवं व्यवहार धर्म तथा विश्व धर्म का संदेश देती है।

भक्तिकालीन सगुण धारा के कवि गोस्वामी तुलसीदास का अविर्भाव तब हुआ जब मुगल शासन का चरमोत्कर्ष काल रहा है। तत्त कालीन समय में निर्गुण निराकार तथा सूफी संतों की प्रेमाश्रयी शाखा से ध्यान हटाकर तुलसीदास जी ने भगवान को लोकमंगलकारी रूप में प्रस्तुत किया है और आम जन में आशा और शक्ति का संचार किया। तुलसीदस जी संत के साथ–साथ एक उच्चिकोटि के मार्गदर्शक और ज्ञाता थे। उन्हों ने पूरे मानवीय समाज को एक नई दिशा दी, जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता, अच्छे कार्य के द्वारा, परंतु कहीं कही वह भटक रहा है। संत तुलसीदास जी ने मानव में जो चेतना का संचार किया, वह न केवल भूतकाल में प्रासंगिक है बल्कि वर्तमान परिवेश में उसकी उपयोगिता आपेक्षित है।

तुलसीदस कृत 'रामचरितमानस' का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि उनका यह महाकाव्य इन शाश्वत जीवन मूल्यों का आकाशदीप है तथा 'मानस' में उनका क्षेत्र सीमित नहीं है, अपितु उनमें वैश्विक दृष्टि है, तथा इनके माध्यनम से मानव मात्र के कल्याण की कामना है। रामचरित मानस युगवाणी है, जो आधुनिक काल में उर्ध्व गामीं जीवन दृष्टि एवं व्यगवहार धर्म तथा विश्वधर्म का संदेश देती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार बालकाण्ड से लंकाकाण्ड तक रामचरितमानस लोकमंगल की साधनावस्था का काव्य है और उत्तरकाण्ड् सिद्धावस्था का।

श्री राम का वनवास काल में सामान्य जनों के संपर्क में आकर उनके सुख–दुख का सहभागी बनना, धरती को अन्या आसुरी शक्तियों से मुक्त करने का संकल्प व संघर्ष निजी स्वार्थों से परे सबके प्रति सम्यक आचरण का निर्वाह तथा राजमद से रहित शौर्य, शील, समता, धैर्य, विवेक, क्षमा, दया, परोपकार जैसे मानवीय सदगुणों का निरंतर विकास यह है कि बालकाण्ड से लेकर लंकाकाण्ड तक राम के शासकीय चरित्र निर्माण की दीर्घकालीन प्रक्रिया लोकमंगल की साधनावस्था का दीर्घ परीक्षण है।

आज सारे विश्व् के लोकतांत्रित शासन व्यंवस्था को प्रश्रय दिया जा रहा है, कथित रूप से लोकतांत्रिक न होते हुये भी गोस्वामी तुलसीदास राजतंत्रीय ढ़ांचें को ही आधिकाधिक जनोन्मुखी और सर्वकल्याणकारी बनाने का प्रयत्न करते हुये 'जनोन्मुखी' राजसत्ता की पक्षधर सिद्ध करते है। एक आदर्श राज्य के रूप में राम राज्य की उनकी परिकल्पना की परिधि में व्यक्ति परिवाद समाज राज्य और विश्व का कल्याण समाविष्ट् है जहां धर्म की संस्कृति अवधारणा नहीं वरन सत्यर ही धर्म है–

'धरम न दूसर सत्य समाना' परहित और अहिंसा इस धर्म के महत्वपूर्ण तत्व हैं। विश्व में कदाचित ही कोई ऐसा देश हो जहां स्वार्थ हिंसा को प्रश्रय देकर मानवीयता के विकास के चरम लक्ष्य को पाया जा सके। अतः परदुखकारता एवं अहिंसा ही काम्यत है–

'परहित सरस धरम नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई ।'

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

शिक्षा जो मनुष्य के विकास हेतु उसकी अप्रकट संभावनाओं को उत्तारोतर दिशा प्रदान कर उसे अपने चरम लक्ष्य तक पहुँचाती है, उस पर सभी वर्णों, वर्गों जातियों व समुदायों का समान अधिकार होना चाहिए। अतः रामराज्य में सबके लिए शिक्षा का प्रावधान है। सभी गुणी विद्वान तथा ज्ञानी है–

'सब गुनग्य पंडित सब ज्ञानी।'

यद्यपि गोस्वामीं तुलसीदास मानस में वर्णाश्रम व्यवस्था को चित्रित करते दिखाई देते हैं किन्तु प्रकारान्त से उनकी यह वर्ण व्यवस्था जन्म नहीं, अपितु कर्म सिद्धांत पर आधारित है। उन्होंने वर्ण व्यवस्था के रूप में जिस कार्मिक व्य वस्थो को प्रतिपादित किया है वह उर्ध्धर नहीं अपितु क्षैतिज समस्तरीय स्वरूप की है, जहां श्रम की गरिमा है। यह छुआछूत और परस्पर भेदभाव का पूर्णतः निषेध कर सभी वर्गो व वर्णो के मध्य समतापरक, समरस व्यवहार को अंगीकार करने वाली है। अपराध मुक्त वर्ग और वर्ण भेदभावना रहित, शत्रुरहित, समाज का वह स्वप्न जो विश्व कल्याण के संदर्भ में आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। रामराज्य की परिकल्प्ना में दिखता है–

दण्डल जतिन्हय कर भेद जहं नर्तक नृत्य समाज ।
जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचन्द्रह के राज ।।

तुलसीदास की समतापरक दृष्टि ही ऐसे राजघाट की परिकल्पना करती है, जहां सभी वर्णो और श्रेणियों के लोगों को स्नान करने का समान अधिकार है–

राजघाट सब विधि सुन्दीर बर ।
मज्जाहिं तहां बरन चारिहु नर ।।

तुलसीदास रामचरित मानस में सभी प्रकार की स्वतंत्रताओं को राजतंत्रीय शासन व्यवस्था में भी सम्यक प्रकार से विनयस्त दिखलाते हैं। किसी व्यरक्ति की वैचारिक स्वतंत्रता एक महान लोकतान्त्रिक मूल्य तथा मानव जाति की प्रगति की आधार शिला है, जिस पर राजसत्ता मदान्ध होकर अंकुश लगाने का प्रयत्न् कर सकती है किन्तु चित्रकूट सभा की प्रंसगोद्भावना के माध्यम से व्यक्ति के इस विचार स्वातंत्रय का पूर्ण निर्वाह किया है। इस प्रसंग का वैशिष्य् निरूपित करते हुए आचार्य रामचन्द्रा शुक्ल लिखते हैं– 'धर्म के इतने स्वरूपों की एक साथ योजना हृदय की इतनी उदात्त वृत्तियों की एक साथ उद्भावना तुलसी के विशाल मानस में ही संभव थी। यह संभावना उस समाज के भीतर बहुत से भिन्न–भिन्न वर्गों के समावेश द्वारा संघटित की गई हैं। राजा और प्रजा, गुरू और शिष्य, भाई–भाई, माता और पुत्र, पिता और पुत्री, ससुर और जमाता, सास और बहु, क्षत्रिय और ब्राह्मण, ब्राह्मण और शूद्र, सभ्य और असभ्य के परस्पर व्यंवहारों के धर्म गांभीर्य और भावात्कर्ष के कारण अत्यंत मनोहर रूप प्रस्फुटित हुआ है।'

इस आदर्श राज्य रामराज्यष में दैहिक, दैविक एवं भौतिक तापों के आतंक से प्रजा सर्वथा भयमुक्तं है व सभी मनुष्य इच्छानुसार स्वधर्म का पालन करते हैं–

' दैहिक दैविक भौतिक तापा । राम राज नहिं काहुहि व्यातपा ।
सब नर करहिं परस्प र प्रीति । चलहिं स्वंधर्म निरत श्रुति नीति । '

तुलसीदास के बहुआयामी, समग्र जीवन चिंतन का एक महत्वपूर्ण पक्ष, सामाजिक पक्ष और समाज का अर्धभाग नारी है । मध्ययुग के तुलसी पराधीन नारी जाति की चीख को व्यक्त कर आधुनिक युग के महिला मुक्ति आंदोलन की आहट का संकेत दे चुके थे, किंतु खुदगर्ज पुरूष समाज हमेशा तुलसी की नारी हीनता वाली पंक्तियों का बिना विचार किए कि वे कुपात्रों के उद्धार हैं नारी को सताने के लिए इस्तेमाल करता रहा और तुलसी की मूल संवेदना पर अपनी मनमानी व्याख्या का कचरा उलीचता रहा। जबकि मानस में वे महत्वापूर्ण स्त्री प्रश्नों के प्रस्तोता के रूप में सामने आते हैं।

पुत्री पार्वती की विदाई के समय माता मैना के मार्मिक उद्धार पितृसत्तात्मक समज में नारी की पराधीन स्थिति को व्यक्त करते हैं–

'कत विधि सृजी नारी जग माहीं।
पराधीन सपनेहु सुख नाहीं ।।'

इस उक्ति के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रसिद्ध समाजवादी चिंतक डॉ0 राममनोहर लोहिया कहते हैं–
"नारी स्ववतंत्रता और समानता की जितनी जानदार कविता मैंने तुलसी की पढ़ी और सुनी उतनी और कहीं नहीं। "
सीता राम के विवाह से पूर्व पुष्प वाटिका की पूर्वानुराग की प्रसंगोद्धानाकर उन्होंने सामन्तीं मान्य ता पर प्रहार किया है। इस संदर्भ में डॉ0 रामविलास शर्मा का कथन हृदयहै–

'सामन्ती समाज में विवाह पहले हो जाता है, प्रेम बाद में शुरू होता है। तुलसीदास ने राम सीता के विवाह में यह

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

दिखलाया है कि विवाह प्रेम की परिणति है। यद्यपि सीता की प्रीति पुरातन है, फिर भी लोक व्यवहार की दृष्टि से कंकन किंकिन नूपुर में राम का मदन ध्वनि सुनना, सियामुख की तरफ नयन चकोरों का देखना और सीता द्वारा राम को हृदय में बिठाकर पलक कपाट लगा लेना आदि क्रियाओं का वर्णन तुलसी के कवि हृदय का परिचय ही नहीं देता, बल्कि उनके रूढ़ियों को तोड़ने वाले साहस का भी परिचय देता है।'

मैं पुनि समुझि देखि मन माहीं ।
पिय वियोग सम दुखु जग नाहीं ।।
मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू ।
तुम्हंयहि उचित तप मो कहुं भोगू ?

बालि की पत्नीं तारा एवं रावण की पत्नी मंदोदरी के चरित्र के माध्यम से 'मानस' में तुलसीदास इस सामंती विचारधारा पर प्रहार करते हैं कि मात्र पुरूष ही विवेकपूर्ण सोच रखते हैं। मानस में जो स्त्री विरोधी उक्तियां हैं, वे तुलसीदास के प्रवक्ता पात्रों की नहीं, बालि और रावण जैसे कुपात्रों की हैं। राम स्वायं बालि को फटकारते हुए कहते हैं .

मूढ तोहि अतिसय अभिमाना ।
नारि सिखावन करसि न काना ।।

औद्योगीकरण की अंधीं दौड़ नगरीकरण के अबाध विस्तार, अति मशीनीकरण के अभिशाप व वैज्ञानिक संसाधनों के दुरूपयोग के कारण आज संपूर्ण विश्वण की प्राकृतिक सम्पदाओं, पर्यावरण तथा मानवेत्तर प्राणियों का अस्तित्व संकट में है। मनुष्य समाज अपनी जघन्य हिंसा भावना के कारण मनुष्य अपने परिवेश को दूषित करता हुआ सामूहिक आत्म घात की राह पर अग्रसर है।

तुलसीदास मध्य युग में ही मनुष्या की इस आत्म विनाशी वृत्ति का पूर्वानुमान कर चुके थे, इसीलिए रामराज्य प्रसंग में मानव समाज के स्वसस्थ आचरण द्वारा मनुष्य, प्रकृति तथा मानवेतर प्राणियों के मध्य समरस तथा संतुलित संबंध की उपादेयता को चित्रित करते हैं–

ससि सम्पन्न सदा रह धरनी। त्रेता भइ .तजुग कै करनी।।
प्रगटि गिरिन्ह् विविध मनि खानी। जगदातमा भूप जग जानी।।
सरिता सकल बहहिं बर बारी सीतल अमल स्वााद सुखकारी
सागर निज मरजादा रहहीं। डारहिं रान तटहिं नर लहहीं।।
बिधु महि पूर मयुरवन्हि रबि तप जितनेहि काज।।
मांगे बारिद देहिं जल रामचंद्र के राज।।

निष्कर्ष : राम चरित्र मानस में सर्वत्र विश्व जननी अनुभवों, सार्वभौमिक सत्यों एवं सार्वकालिक मानवीय संवेदनाओं की विशद अभिव्यक्ति प्राप्तस होती है। उत्तरकाण्ड में वे उन मानसिक रोगों मोह, लोभ, क्रोध असीमित कामनाऐं, ममता, ईष्या, पर संताप, अहंकार, दम्भै, कपट, तृष्णा, अविवेक आदि की चर्चा करते हैं, जो आज समस्त विश्व को आक्रान्त किए हुए हैं। इन रोगों की पीड़ा से मानव समुदाय की मुक्ति व विश्व कल्याण की कामना यहां स्पष्ट, झलकती है –

एक ब्यांधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याकधि,
पीड़हि संतत जीव कंहुसो किमि लहै समाधि ।

इस प्रकार रामचरितमानस में श्री राम–चरित गान के साथ–साथ विश्व मंगल के निमिक आधुनिक मानव से संबंधित प्रश्नों, समस्याणओं एवं मूल्यों की चिंता का अति विशाल परिप्रेक्ष्य भी संयुक्त है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री रामचरित मानस, गोस्वामीं तुलसीदास, टीकाकार– हनुमानदास पोद्धार, गीता प्रेस गोरखपुर।
2. आधुनिकता और तुलसीदास, श्री भगवान सिंह भारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001.
3. परम्पकरा मूल्यांकन, डॉ0 रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रकाशित, 1981.
4. त्रिवेणी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाश इलाहबाद 2013.
5. सनातन रामवृत्त और गोस्वांमी तुलसीदास, डॉ0 लक्ष्मीनारायण, चिन्ता् प्रकाशन, पिलानी–1987.

*****